International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182 Print ISSN: 2349-5979
www.allsubjectjournal.com
Volume 3; Issue 2; February 2016; Page No. 178-181

विज्ञान और तकनीकि के क्षेत्र में वेदों की प्रासंगिकता

[1] डॉ. के जयलक्ष्मी, [2] डॉ. ए.के. बिन्दु

[1] सहायक प्राध्यापिका (वरिष्ट), भाषा विभाग, वी.आई.टी विश्वविद्यालय, वेल्लोर, तमिलनाडु
[2] सहायक प्राध्यापिका, हिंदी विभाग, महाराजास कॉलेज, एर्णाकुलम, कोचीन, केरला

सार : अनेक पुण्यात्माओं को जन्म देने वाले इस परिपावन भारतीय संस्कृति के इतिहास में वेदों का स्थान अत्यन्त गौरवपूर्ण है। वेद सूचनाओं की संपदा है जो मात्र शास्त्रीय और आध्यात्मिक आदर्शों को ही नही वरन् वैज्ञानिक तथ्यों के उपयोग और इस्तेमाल का विवरण भी प्रस्तुत करता है। १८२० वीं सदी के आविष्कार और खोजों के साथ साथ अभियांत्रिकी और तकनीकि विषयों का उल्लेख वैदिक ग्रन्थों में ऋषियों ने की है। आधुनिक विज्ञान से जुडे आज तक के सारी जानकारी का आधार वेद है। अतः इस विषय को निगमा (विज्ञान) और आगमा (तकनीकि) में विभक्त करना उचित है। विज्ञान तकनीकि के क्षेत्र से संबद्धता विषय इसमें अंतर्निहित है।

किवर्ड : वेद , विज्ञान , तकनीक

"तद्वचनादाम्नायस्य प्राणाण्यम्" और "बुद्धिपूर्वा वाक्यकृतिर्वेद" कहकर ऋषि कणाद ने वेद को दर्शन और विज्ञान का स्रोत माना है। वेद का अर्थ है दिव्य साक्षात्कार से उद्भूत ज्ञान। इनमें पूर्वजों के जो तपोमय चिन्तन और अन्तःदृष्टि का फल निहित है वह समग्र विश्व केलिए ग्रहण करने योग्य है। वेद की विषय सामग्री में वर्तमान की संपूर्ण वैज्ञानिक प्रगति तिरोहित हो जाती है। 18–20 वीं सदी के आविष्कार और खोजों के साथ–साथ अभियांत्रिकी और तकनीकि विषयों का उल्लेख वैदिक ग्रन्थों में ऋषियों ने की हैं। ऋक्, यजु, साम तथा अथर्व - विज्ञान, कर्म, उपासना तथा ज्ञान के चार काण्ड हैं। ऋग्वेद के ऋषि–ऋषिकाएँ विश्व के प्रथम वैज्ञानिक थे। महर्षि कृष्णद्वैपायन के शब्दों में "लोक में जितने भी आगम शास्त्र तथा लोक प्रवृत्तियाँ देखी जाती है वे सब वेद के आधार पर ही क्रमानुसार आरंभ हुई है।" [1]

परमब्रह्मनिष्ठ याज्ञवल्क्य इसी मत की पुष्टि करते हुए कहते हैं "वेदशास्त्र से भिन्न कोई शास्त्र प्रमाण नहीं, समस्त शास्त्र सनातन वेद से ही निकले हैं।"[2] Science केवल विज्ञान का परिचय देता है जबकि इसका पर्याय 'सांख्य' विज्ञान तथा ज्ञान दानों का दर्शन कराता है। वर्तमान विज्ञान केवल उन्हीं सिद्धान्तों में और कई उदाहरणों सहित पुनः प्रस्तुत करता है जो पहले ही वेदों में विद्यमान है।

विज्ञान के अन्तर्गत वैदिकगणित का स्थान सर्वोच्च है। वैदिककाल में गणित का इतना अधिक विकास हो चुका था कि वर्तमान का गणितशास्त्र पूर्णरूपेण इस पर ही आधारित है। वेदांग ज्योतिष में कहा गया है कि जिस प्रकार मयूर के सिर पर शिखा सर्वोच्च स्थान पर होती है व नाग के मुँह में मणि का जो महत्त्व है वही महत्त्व वेदांग शास्त्रों में गणित का है। यजुर्वेद के मंत्रों[3] में 1,3,5,…..33 संख्याओं का वर्णन है

एकयास्तुवत प्रजाऽअधीयन्त प्रजापतिराधिपतिरासीत् ।
त्रिसृभिरस्तुवत् ब्रह्यासृज्यत् ब्रह्मणास्तपतिरधिपतिरासीत् ।
पञ्चभिरस्तुवत भूतान्यन्त भूतानां पतिरधिपतिरासीत् ।
सप्तभिरस्तुवत सतऽऋषयोऽसृज्यन्त धाताधिपतिरासीत् ।।

तो मंत्र 17/2 में बहुत बड़ी संख्याओं में करोड़, अरब, खरब, निखरब आदि का वर्णन भी दृष्टव्य है।[4] निश्चय ही वेदों में गणित का अतिसूक्ष्म ज्ञान है। भारत में गणित की तीन शाखाएँ हैं: *अंकगणित* (Arithmetic), *बीजगणित* (Algebra), *रेखागणित* (geometry)। बीजगणित में त्रिकोणगणित का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। गणितीय सूत्र सर्वत्र वैदिक साहित्य में बिखरे हुए मिलते हैं। अंकगणित संख्याओं में योग, शेष, गुण एंव भाग का उल्लेख है। शून्य का आविष्कार गणित के क्षेत्र में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। इसकी आविष्कार से आधुनिक गणित को एक नई राह मिली। संपूर्ण वैज्ञानिक विकास के क्षेत्र में आज तक जितने भी अनुसंधान हुए हैं उनमें से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण योगदान है अंकचिह्नों की खोज़ (0-9)। शून्य तथा दशंलव की खोज़ अंक पद्धति विज्ञान के क्षेत्र में ही नहीं बल्कि सर्वसाधारण जीवन के प्रतिदिन के व्यवहारों में बहुत उपयोगी रहा है जिससे गणितीय जटिलताएँ खत्म हो गई।

वैदिक काल में यज्ञ वेदी के स्वरूप तथा आकार निश्चित करने केलिए जिस पद्धति का विकास हुआ उनमें से रेखागणित या ज्यामिती का उद्गम हुआ। सूर्य सिद्धान्त में आधुनिक त्रिकोणमितिफलन (Trigonometry functions) की जड़ उपलब्ध है जिसे आगे जाकर पाइथागोरस प्रमेय (Pythagoras theorem) के नाम से ख्याति प्राप्त हुई। वैदिक गणित अनेक समीकरणों के अद्वितीय हल देता है, जिन्हें आधुनिक गणित शेषफल प्रमेय विधि प्रयोग के द्वारा ही किया जा सकता है जैसे कैपलर समीकरण का 90 सेकॅन्ड में वैदिक गणित प्रणाली, गणित पद्धति से हल किया जा सकता है।

दीर्घ् चतुर श्रस्याक्ष्ण्या रज्जुः पार्श्वमानी तिर्मडः।
मानी च यत्पृथ्भूते कुरू तस्ते दुभयं करोति ।।

आज विभिन्न वैज्ञानिक अनुसंधानों को प्रमाणित करने केलिए गणित को कसौटी के रूप में प्रयोग किया जाता है। भौतिकी या पदार्थविज्ञान, रसायनशास्त्र, जीव विज्ञान (जीव भौतिकी, तकनीकी) वनस्पति विज्ञान आदि की तरह ही सामाजिक क्षेत्रों में भी विभिन्न

[1]. महाभारत अनु. 1.22.4
[2]. ब्रहदयोग याज्ञवल्क्य स्मृति. 12.1
[3]. 14/28-31 & 18/24-26
[4]. इमा मे अग्नऽइष्टका धनेवःसन्त्वेका च दश च शंत च शंत च सहस्रं च सहस्रं चायुतं च नियुतं च नियुतं च प्रयुतं चार्बुदं च न्यर्बुदं च समुद्रक्ष मध्यं चान्तक्ष परार्धश्चैता मे अग्न ऽ इष्टका धनेवः सन्त्वमुत्रामुष्मिँल्लोके। (यजुर्वेदः 1.22.1)

प्रकार के प्रयोगों, निरीक्षण–परीक्षण द्वारा प्राप्त जानकारी का विश्लेषण, संश्लेषण, वर्गीकरण, एकत्रीकरण, सत्यापन आदि कार्य संपादन केलिए सांख्यकीय पद्धति (statistical methods) अत्यंत आवश्यक हो गई है। विभिन्न प्रकार के वैज्ञानिक अध्ययन केलिए गणित का यह आधार दिन प्रतिदिन ओर अधिक बढ रहा है।

वेदांतों के ज़रिए वैदिक विज्ञान के जो ज्ञान प्राप्त होता है वह तर्क और प्रयोग से ही अर्जित की जा सकती है। इसमें प्रतिपादित मूल्यों का समर्थन आज सार्वभौमिक हो गया है। प्रकृति के नियमों के साथ सामंजस्य रखकर अद्यतन जानकारी देते हुए आधुनिक विज्ञान में चमत्कारी विकास लाना इसकी खासियत है। इसमें खगोल विज्ञान से लेकर आयुर्वेद, वनस्पति से लेकर पर्यावरण आदि से जुडी बातों का बयान हआ है। वैदिक ऋषियों को इसका संपूर्ण ज्ञान था, एवं आगामी खोजों केलिए एक नई राह खोल दी। ऋग्वेद के कई श्लोकों में सूर्य से संबंधित बातों का विवरण मिलता है। वेदों में यह स्थापित किया गया है कि पृथ्वी का सूर्य और चाँद से दूरी 108 व्यास है। आधुनिक विज्ञान इनकी वास्तविक दूरी 107. 6 और 110.5 परिकलित कर वेदों की खोजों को सही ठहराती है। ऋग्वेद में सूर्य वर्ष 364.24675 दिन परिकलित है, और आधुनिक खोजों में इसकी परिकलन अधिवर्ष से समायोजन कर 365 दिन बताया गया है।[5] ग्रहों का दूरी, मास, ऋतु की अवधि, गति आदि का ज्ञान चंद्र की घुरणगति एवं एक ही पार्श्व का सदैव पृथ्वी की और अभिमुख होने की बातों को वेद स्थापित करता है। वेदों के अनुसार सूर्य स्थावर है और पृथ्वी उसकी परिक्रमा करती है। सूर्य किरणों के आधार पर ही 10 दिशाओं के विभाजन किए गए। हर दिशा को 36° के कोण में विभक्त किया है।[6] आधुनिक युग की खोज – गुरूत्वाकर्षण का श्रेय न्यूटन को नहीं बल्कि भास्कराचार्य को है, जिन्होंने युगों पहले ही इस पर कार्य किया था और स्थापित किया कि पृथ्वी आकर्षण शक्ति है।[7] विज्ञान के इस आधारभूत आविष्कार की ख्याति भारत को है।

मनुष्य को अपने वैयक्तिक, पारिवारिक और सामाजिक कर्तव्यों को भली भॉति निभाने केलिए यह ज़रूरी है कि उसका तन और मन स्वस्थ रहें। शरीर की रचना का ज्ञान, विभिन्न रोगाों तथा उनको दूर करनेवाली औषधियों की जानकारी आवश्यक है। वैदिककालीन ऋषियों ने आयुर्वेद विज्ञान में इसे सुरक्षित रखा। आयुर्वेद पंचभूतों से जुडा है, अतः पंचकरम चिकित्सा पर ज़ोर देता है। इसमें जल चिकित्सा, सूर्यकिरणों से चिकित्सा (पीलिया आदि केलिए निवारण), हृदय रोग का शमन[8] आदि का वर्णन है। वेदों में अनेक स्थलों पर चिकित्सा विषयक प्रकरणें में भांति भांति के रोगाों को उत्पन्न करनेवाले कृमियों का उल्लेख है। सूर्य सभी प्रकार के कृमियों का हन्ता है।[9] आधुनिक वैज्ञानिकों का मानना है कि आग में कोई जीवाणु नहीं रहता। लेकिन हाल्ही में हुआ एक अध्ययन ने वेदों के इस मत को सही घोषित किया कि अग्नि सभी प्रकार के क्रमियों को जलाकर दंगद कर देनेवाला है।[10] आयुर्वेद चिकित्सा के आठ प्रकार का वर्णन अथर्ववेद में है।[11] आयुर्वेद में स्त्री रोग विज्ञान का प्रमुख स्थान है। आधुनिक विज्ञान इस क्षेत्र में हुए हर विकास का अपना श्रेय मानता है। हाँ बात तो सही है कि इसमें जिन उपकरणों का विकास हुआ है वह आधुनिक युग की देन है पर इसका नींव वेदों में मिलता है। भागवत में शुक्र का एक कण शोणित के साथ मिलकर, कलल निर्माण से लेकर भ्रूण के विकास का वर्णन मिलता है जिसे आधुनिक युग सही ठहराता है। महाभारत में गांधारी जिस प्रकार अपने भ्रूण को सौ घी की घडों में रखती है और भ्रूण का विकास होता है उसके आधार पर आज IVF चिकित्सा हो रही है। C-section, गर्भच्युत, भ्रूणविज्ञान, गर्भस्राव, भ्रूणहत्या जैसे विषयों पर भी वेद प्रकाश डालते हैं।

आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति पूर्णतः प्रकृति पर निर्भर है। मानव जीवन प्रकृति के पाँच तत्वों के योग से बना है। प्रकृति की असंख्य जडी बूटियाँ प्राणि जगत् के सहस्रों रोगों की औषधियाँ है। अतः आयुर्वेद के अंतर्गत वैज्ञानिक प्रकृति से उद्भूत औषधियों के प्रयोग और लाभ आदि की जानकारी है। अथर्ववेद में 2000 से भी ज़्यादा पेड पौधों का उल्लेख है जिससे हर रोग का निवारण होता है। तुलसी, गुलगुले, पीपल [12] आदि का विवरण भी है जो प्राकृतिक तौर से बीमारियों के शमन केलिए ज़रूरी है।

न तं यक्ष्मा अरुन्धते नैनं शपथो अश्नुते।
यं भेषजस्य गुल्गुलोः सुरभिर्गन्धो अश्नुते॥

वैदिक युग में स्त्री रोग विज्ञान से जुडी सारी समस्याओं केलिए औषधियों का इस्तेमाल है जिसमें कमज़ोर अंडाणु या शुक्र ठीक हो सकता है। आज के प्राकृतिक वैद्य का मूल यही है। आयुर्वेद में पर्यावरण और वातावरण को दूषित किए बिना उसके संरक्षण पर बल दिया गया है। इससे कई रोगों से मुक्त मिलती है। पृथ्वी, वायु, अंतरीक्ष को ऊर्जा की प्रमुख स्रोत मानी गयी है। प्रकृति में पेड़ पौधें के साथ शुद्ध वायु एवं जल का बहुत महत्व है। इनको विषाक्त करने से मात्र मनुष्य ही नहीं वरन् सारे जीव जन्तुओं पर इसका असर पडेगा। पर्यावरण में सारे मूल तत्व एक दूसरे से जुडे हैं। घटकों में संतुलन बनाए रखने केलिए इसकी आवश्यकता है। पर्यावरण के विभन्न घटकों का असीमित दोहन एवं पारिस्थितिक तंत्र के साथ समस्त संसाधनों की सुरक्षा के प्रश्न उठ खडे हुए हैं। अतः प्राकृतिक उपकरणें एवं मानवीयक्रिया कलापों के हर पहलू को पर्यावण से जोडकर देख जाने लगा है। वैदिक ऋषियों का यह माननां है कि जब मनुष्य प्रकृति के साथ मिलकर रहेगा तब उसकी वृद्धि होगी। इसलिए उसे पंचभूतों के महत्व को समझते हुए उसके साथ जीना है

अनु सूर्य मुदयतां हृद्द्योतो हरिमा च ते।
गो रोहितस्य वर्णिन तेन त्व परिदध्मसि ।।[13]

वैदिक चिकित्सा का महत्व इस बात पर है कि वह मनुष्य को अज्ञान के अंधकार में डूबने से बचा सकता है। आज जब मनुष्य तेज़ रफ़्तार से आगे बढ़ता जा रहा है, वह अपने लाभ और स्वार्थ केलिए सभी का नाश करता जा रहा है। इसके कारण कई महामारी और प्राकृतिक विपदाओं का सामना उसे करना पड़ रहा

---

5. www.vedic literature.com
6. प्राचीन भारत की सूर्य घडी
7. आकृष्टिशाक्तिश्च मही तया यत् खस्थं गुरुस्वाभिमुखं स्वशक्तत्या। आकृष्यते तत्पततीव भाति समेसमन्तात् क्व पतत्वियं खे।। सिद्धांतशिरोमणि गोलाध्याय
8. अनु सूर्य मुदयतां हृद्द्योतो हरिमा च ते।गो रोहितस्य वर्णिन तेन त्व परिदध्मसि (अथर्ववेदः1.22.1)
9. उद्यतादित्यः क्रिमीन् हन्तः रश्मिभिः।भिनद्मयश्मना शिरोदहाम्यग्निना मुखम् ।। (अथर्ववेदः2.32.1)
10. सर्वेषां च क्रिमीणां सर्वासां च क्रिमीणाम् । भिनद्मयश्मना शिरोदहाम्यग्निना मुखम्।।(अथर्ववेदः5.23.13)
11. (1) शल्य (Surgery) (2) शल्क (ENT) (3) कायाचिकित्सा (Medicine) (4) भूतविद्या (Psychiatry) (5) कुमारभृत्या (Pediatrics) (6) अगदतंत्र (Toxicology) (7) रसायना (Nutrition, Rejuvenation & geriatrics) (8) वजीकरण (sexology & virilization)
12. अथर्ववेद :19.38
13. अथर्ववेदः1.22.1

है। जब अंतरीक्ष, पृथ्वी, जल, पेड़ पौधों और विश्व में शान्ति होगी तभी मानव मन को भी शांति प्राप्त होगी।

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्ति पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।[14]

ज़ाहिर होता है कि यह विज्ञान की शाखा युगों पहले ही विद्यमान है न कि आधुनिक युग की देन। जन्तुविज्ञान को जीवशास्त्र से जोडकर वेदों में पशु प्रजनन, पशुओं का सही पालन– पोषण के साथ प्रकृति में इनकी आवश्यकता[15] पर विचार किया गया है तो दूसरी ओर वेदों मे जीवविज्ञान में गुण सूत्रों का प्रयोग, अलैंगिक प्रजनन प्रक्रिया से cloning के उदाहरण महाभारत में कौरवों के जन्म कथा हमें देती है जिसका नींव वेद है।

विश्व वाड़मय में यह आश्चर्य का विषय है कि ऋषियों द्वारा सूर्य एवं प्रकृति की स्तुतियों में उच्च भौतिकी विज्ञान वर्णित है। भौतिकी और रसायन एक दूसरे से जुडे हैं। प्रकृति में पाए जानेवाले मूल घटकों की संख्या Hydrogen से लेकर Uranium तक 92 है परन्तु वेद के अनुसार प्राकृतिक कारणों से सृष्टि के आदि में रचित अणुओं अथवा मूल घटकों की संख्या 100 थी। आधुनिक पदार्थ विज्ञान की सत्यताएँ वेद मंत्रों में प्रकट होती है।[16] वेद सौर ऊर्जा की अक्षय प्रकृति का निरूपण करता है जो विज्ञान की सबसे अधिक दुर्जेय समस्या है।[17] इसका समाधान यह हुआ है कि ब्रहमाण्डीय ऊर्जा का माध्यम् ही मूल है जिसमें से विश्व का संपूर्ण द्रव्य, करोडों आकाश गंगा के सहित उत्पन्न हुआ। ब्रहमाण्डीय ऊर्जा के मूल का संबन्ध ब्रहम से निसृत हुई है। शिवलिंग को आधर बनाकर ही आज का Nuclear reactors निर्मित है। अगस्त्य संहिता में विद्युत उत्पादन से पानी बनाने का वर्णन मिलता है। ऋग्वेद में भी दो वायुओं के मिश्रण से जल की उत्पत्ती का वर्णन है।[18] साथ ही इलक्ट्रोप्लेटिंग में विद्युत के प्रयोग के बारे में अगस्त्य ने बताया है।

संस्थाप्य मृण्मये पात्रे ताम्रपत्रं सुसंस्कृतम्। छादयेच्छिखिग्रीवेन चार्दाभि: काष्ठापांसुभि:॥
दस्तालोष्टो निधात्वय: पारदाच्छादितस्तत:। संयोगाज्जायते तेजो मित्रावरुणसंज्ञितम्॥ [19]

यह एक आश्चर्यजनक तथ्य है कि वेद एकमात्र ऐसा ग्रंथ है जिसके सिद्धान्त आधुनिक विज्ञान एवं तकनीकी के साथ पूर्ण रूप से मेल खाते हैं क्योंकि इसमें विज्ञान के अनुसार जगत् की क्रमिक रचना का प्रतिपादन हुआ है।

विज्ञान को पूर्णता तभी मिलती है जब उसका व्यावहारिक अनुप्रयोग हो। यहीं से विज्ञान में आभियांत्रिकी और तकनीकी की शुरूआत हुई। वैदिक ऋषि इस क्षेत्र में भी प्रवर थे। वेदों में भिन्न भिन्न प्रकारों के रथों, विमानों एवं नावों का वर्णन है जो भूमि, आकाश, जल, पर समान रूप से जा सकें[20] और विभिन्न सवारी की खोज पर अनुसंधान करने की बातें कही गई है।[21] वेदों में ऐसे रथों का वर्णन है जो वायु [22] तथा बिजली[23] से चलते थे। दूसरी ओर ऐसे विमानों का भी निर्माण हुआ जो तीन पहिएवाले हो जो अंतरीक्ष में उड सके [24] इसी पर आज के space ships बनाए गए हैं। इससे यह स्थापित हो जाता है कि अंतरिक्ष यात्रा वैदिक युग में प्रचलित था। इसके अलावा ऐसे विमानों का भी बकान है जो सूर्य किरणों से शक्ति प्राप्त कर उससे ईंधन उत्पन्न कर विमान को उडाया जा सकता है, साथ ही 100 से अधिक ऐसे जलयानों अथवा पनडुब्बियों[25] का चित्रण हैं जिससे सात समंदर पार कर अन्य देशों के साथ कपडों का व्यापार किया जाता था। रथ और उसके पहिए बनाने केलिए कील की आवश्यकता थी जो धातुओं के ज्ञान से ही संभव था। इस युग के ऋषियों को अयास, स्यमा, लोहा, तांबा का बहुत अच्छा ज्ञान था। वेदों में वज्र शब्द का प्रयोग अनेक स्थानों पर हुआ है। वज्र का मुख्य धातु लोहा बताई गई है। लोहे की समीकरण केलिए वैदिक युग में भट्टी बनाए गए थे। वेदों में वज्र को आयसः अर्थात् लोहे से बनाए जानेवाले अस्त्र बताया गया है।[26] आजकल की तोपें, मशीनगनें और टैंक वज्र के प्रतिरूप माने जाते हैं। दिल्ली में स्थित लोहा स्तंभ इसका उत्तम उदाहरण है। हडप्पा की खुदाई में 120 से भी अधिक उपकरण प्राप्त हुए जिनका उपयोग वैदिक युगीन शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में होते थे। लोहे से बनाये हुए कृत्रिम अवयवों का लगाना, आँखों का प्रतिरोपण, कपाल, मोतियाबिन्द, पत्थरी की शल्यकर्म के साथ हड्डियों को जोडने[27] त्वचा, नाक एवं कानों की कॉस्मेटिक सर्जरी केलिए इनका प्रयोग होता था।

कृषि के क्षेत्र में उत्तम तरीके की सिंचाई का विवरण है। 100 या 1000 से ज़्यादा टैंक उस युग में बनाये गए जिससे खेतों में पानी प्राप्त हो। अच्छे बीजों की आवश्यकता, बोआई, निराई की तकनीक भी प्राप्त है।[28] क्रियासार वर्तमान युग में फैलते हुए व्यवसाय है परन्तु वैदिक तकनीकी में भी यह प्रचलित था। यह इस बात का साक्ष्य है कि उस समय खाद्य क्षेत्र अत्यंत विकासशील था। उसीप्रकार वैदिक युग में आविष्कृत कई यंत्र जैसे विश्वक्रियाकरश्ना यंत्र, दर्पणाशास्त्रम् आदि का आधुनिक युग में विकसित होकर विकास के नए द्वार खोल दिया है। Nano Technology भी वैदिक युग से परे नहीं था। यह माप - तोल में प्रयुक्त होता था साथ ही रसायन के क्षेत्र में मूलतत्वों की खोज एवं अनुप्रयोगों केलिए हुआ जिसको 20वीं सदी में पुनः नया रूप मिला और आधुनिक युग इस देन केलिए वेदों का आभारी रहेगा।

वेद सर्वयुगीन तथ्यों का उद्घाटन करता है। प्राचीन समय में न ऑफसेट प्रिटिंग की मशीनें थी और न स्क्रीन प्रिटिंग या न इंटरनेट था जहाँ किसी भी विषय पर असंख्य सूचनाऐं उपलब्ध होती हैं। फिर भी प्राचीनकाल के ऋषि मुनियों ने अपने पुरूषार्थ, ज्ञान और

---

[14]. अथर्ववेदः19.9.94

[15]. ईश्वरीय ज्ञान वेद पृष्ठ 78.79 योगीराज श्री.अरविंद

[16]. The problem of origin of matter and energy-the most abstruse problem

[17]. अनने जलभंगोस्ति प्राणो दानेषु वायुषु एवं शतानां कुभानासंयोगकार्यकृत्स्मृतः।।

[18]. ऋग्वेद 1.2.7

[19]. अगस्त्य संहिता

[20]. आठ प्रकार के विमानों: 1. शक्त्युद्गम - बिजली से चलने वाला। 2. भूतवाह- अग्नि, जल और वायु से चलने वाला। 3. धूमयान - गैस से चलने वाला। 4. शिखोद्गम - तेल से चलने वाला। 5. अंशुवाह - सूर्यरश्मियों से चलने वाला। 6. तारामुख - चुम्बक से चलने वाला। 7. मणिवाह - चन्द्रकान्त, सूर्यकान्त मणियों से चलने वाला। 8. मरुत्सखा - केवल वायु से चलने वाला। ऋग्वेद 1.116.3

[21]. त्रिश्चिन्नो अद्याभवतं नवेदसा विभुर्वा याम उत रातिरश्विनांयुवोर्हि यन्त्रं हिम्येव वाससोऽभ्यायंसेन्या भवतं मनीषिभिः ।। (ऋग्वेद 1.116.3)

[22]. प्र वो वायुं रथयुजं कृणुध्वं प्रदेवं विप्रं पनितारमर्कं।इषध्यव ऋतसापः पुरन्धीर्वस्वीनों अन्न पत्नीरा धिये धुः।। (ऋग्वेद 5.41.6)

[23]. आ होता मन्द्रो विदथान्यस्थात्सत्या यज्वाकवितमः स वेधाः। विद्युद्रथः सहसस्पुत्रो अग्निः शोचिष्केश पृथिव्यां पाजो अश्रेत।। (ऋग्वेद 3.14.1)

[24]. ऋग्वेद मण्डल 4.25 26

[25]..यास्ते पूषन्नावो अन्तः समुद्रे हिरण्ययीरन्तरिक्षे चरन्तिांताभियां सि दूत्यां सूर्यस्य कामन कृत श्रव इच्छमानः।।(ऋग्वेद 6.58.3)

[26].ऋग्वेद मण्डल 10.48.3

[27]. वही 1.116.15 1.117.15

[28]. वही 4.57.5 1.127.2

शोध की मदद से कई शास्त्रों की रचना की और उसे विकसित किया। वर्तमान और भविष्य को विज्ञान और तकनीक की जडों तक ले जाकर उसके मूल्य और सिद्धान्तों को समझने और परखने में वेद सक्षम रहे हैं। यह सत्यों का भरमार है जिसका एक अंश ही आधुनिक विज्ञान में चर्चित हुआ है। लेकिन ऐसे ओर अनेक सत्य उनमें है जो अभी तक अज्ञात है, जिनका अन्वेषण भविष्य केलिए उपयोगी सिद्ध होगा। विज्ञान एवं तकनीकी के भावी विकास केलिए वेद पथप्रदर्शक बन सकते हैं।